कर भला हो भला

चम्पापुर में कुलधर नाम का एक साधारण गृहस्थ रहता था। कुलधर के पिता श्रेष्ठी धर्मधर बड़े ही धार्मिक और नीतिनिष्ठ गृहस्थ थे। उन्होंने एक दिन कुलधर को अपने पास बुलाकर कहा–

वत्स ! अब मेरा अन्तिम समय आ गया है। परलोक प्रस्थान करने से पूर्व मैं तुम्हें दो बातें कहना चाहता हूँ।

पिताजी, आप जो कहेंगे उसको पालन करने का मैं वचन देता हूँ।

धर्मधर–

वत्स ! मैंने जीवन में सत्य, सरलता और सादगी को ही धर्म समझा है। तुम भी इसी मार्ग पर चलोगे तो कभी कष्ट नहीं पाओगे।

और जो भी कमाओ उसका एक-सोलहवाँ भाग शुभ कार्यों में खर्च करना, तुम्हारी लक्ष्मी कभी नहीं घटेगी।

पिताजी ! आपकी दोनों बातें मैंने गाँठ बाँध लीं। मैं अवश्य इनका पालन करूँगा।

कुछ दिन बाद धर्मधर परलोकवासी हो गये।

कुलधर पिता की शिक्षा के अनुसार नीतिपूर्वक अपना जीवन चला रहा था। कुलधर की पत्नी कुलानन्दा ने क्रमशः सात पुत्रियों को जन्म दिया। सातों ही रंग-रूप में एक से एक सुन्दर थीं।

एक दिन कुलानन्दा उदास बैठी थी। कुलधर ने पूछा–

कुलधर ने समझाया–

वे दोनों आपस में बातें कर ही रहे थे कि द्वार पर एक वृद्ध महिला ने पुकारा–

आवाज सुनकर कुलधर बाहर आया–

अरे, भुआजी आप? अचानक कैसे आना हुआ? और अकेली ऐसी हालत में?

क्या बताऊँ बेटा ! तुम्हारे फूफाजी ने विदेश में व्यापार करके खूब धन कमाया। हम सब सम्पत्ति लेकर जहाज से वापस आ रहे थे कि अचानक समुद्र में भयंकर तूफान आ गया और हमारा जहाज डूब गया। डूबते-डूबते मुझे जहाज का एक टुकड़ा हाथ लग गया। जिसके सहारे में किनारे पर पहुँची हूँ। बेटा! हाय, मैं तो बेसहारा हो गई।

कुलधर ने भुआजी को आश्वासन दिया और हवेली का एक कमरा उनके लिये खोल दिया–

आप चिन्ता शोक न करें। यहाँ आराम से रहें और धर्म-ध्यान में समय बितायें। हम आपकी सेवा करेंगे।

भुआजी आराम से वहाँ रहने लगीं।

एक दिन कुलानन्दा भुआजी के लिए खाना लेकर आई। देखा, भुआजी का कमरा भीतर से बन्द है। खिड़की की जाली में से भीतर झाँका तो उसकी आँखें फटी रह गईं–

हैं ! इतने मूल्यवान रत्न भुआजी के पास हैं और वह ऐसी दरिद्र हालत में रहती हैं।

उसने सोचा–

एक-एक रत्न लाखों का होगा। इन रत्नों से तो मेरी पुत्रियों का विवाह आराम से हो जायेगा।

वह विचारों में खोई उलटे पैर वापस लौट गई।